FOR M. A. Semester - I
Philosophy —— CC-02

रविन्द्रनाथ टैगोर का मानव धर्म

डा० रागिनी कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

विश्व प्रसिद्ध समकालीन भारतीय चिन्तक रविन्द्रनाथ टैगोर का नाम न केवल भारतीय दार्शनिक के रूप में जाना जाता है बल्कि ये पाश्चात्य दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र एंव धर्मशास्त्र के क्षेत्र में भी सुप्रसिद्ध रहे हैं। ये प्रसिद्ध गीतकार एवं नाटककार के रूप में भी जाने जाते हैं। अपनी प्रसिद्ध कृति 'गीतांजली' के लिए इन्हें नोवेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

दार्शनिक चिन्तन के क्षेत्र में भी इनकी कुछ अपनी विलक्षणता है। इनके दर्शन की अभिव्यक्ति का माध्यम दर्शनशास्त्री न होकर कवितमय है। साथ ही ये दर्शनशास्त्र को तर्कशास्त्र पर आधारित नहीं मानते बल्कि, दर्शनशास्त्र के अन्तः प्रज्ञा पर आधारित मानते हुए आत्मानुभूति को विशेष महत्व देते हैं। वस्तुतः धर्म उनके दर्शन व्यवस्था का केन्द्र विन्दु है, क्योंकि उनके अनुसार मानव के अस्तित्व का विकास धर्म से ही संभव है। जिस चरम़ लक्ष्य की प्राप्ति की ओर मानव अस्तित्व की उन्मुखता है उसकी प्राप्ति का मार्ग अपनी वास्तविक विशिष्टता को विकसित करना है। यही टैगोर का मानव धर्म है। अतः स्पष्ट है कि धर्म से उनका अभिप्राय किसी विशिष्ट धर्म यथा हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई इत्यादि से नहीं बल्कि, धर्म से इनका अभिप्राय मानव धर्म से है। अपने मानव धर्म की अवधारणा में उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय किया है। ये धर्म को किसी समुदाय, देश जाति भुखण्ड या गिरोह का थाती या धरोहर नहीं मानते ।

Scanned with CamScanner

टैगोर, धर्म के तीन स्तर की चर्चा करते हैं। पहले स्तर में ये ब्रह्म के रूप में दिखाई पड़ता है। इसके बाद इनके विचारों में परिवर्तन आता है और ये हिन्दु धर्म में समन्वय लाने का प्रयास करते हैं और तीसरे स्तर में वे मानव धर्म का समर्थन करते हैं और यही उनके धार्मिक विचारों का चरम विकसित रूप है।

टैगोर का कहना है कि विभिन्न प्रचलित धर्मों का प्रचलित रूप मनुष्य को दिशाहीन ढंग से विभिन्न ठहराव के विन्दु पर लाकर खड़ा कर देता है। टैगोर का कहना है कि हम उसे धर्म कहते हैं क्योंकि उनमें आशिंक रूप से अपने-अपने धर्मो का वास्तविक रूप का पकड़ है। किन्तु इनमें प्रचलित ब्रह्म रूप का भेद को समझने के लिए उस प्रकृति को समझना होगा जहॉं पर सभी धर्मो का ठहराव का आधार है। क्योंकि यही आधार सच्चे धर्म की वास्तविकता है। उनके अनुसार सच्चा धर्म वस्तुतः अपने 'स्व' के बन्धन से ऊपर उठ सब कुछ के साथ एकरूपता को अनुभूत करने का प्रयास है। टैगोर का कहना है कि धर्म एक प्रकार से घर से अलग हुए व्यक्ति का घर के प्रति आतुरता (Home Sickness) है। उनका कहना है कि जिस प्रकार गृहातुर पहाड़ी पक्षी समय आने पर रात-दिन उड़ता हुआ पहाड़ पर अपने घोंसले तक पहुॅंचने के लिए आतुर रहता है, उसी प्रकार जगत में मनुष्य भी अपने वास्तविक 'घर' से बिछड़ा हुआ पक्षी है तथा उसका धर्म उसकी गृह आतुरता है, उसे अपने विछड़े हुए घर की ओर ले जाने की उत्सुकता है।[1.]

टैगोर ब्रह्म के रूप में हिन्दु धर्म में प्रचलित मूर्तिपूजा की भत्सर्ना करते हैं। अपने निबन्ध 'साकार और निराकार' में उन्होंने स्पष्ट कहा है कि सर्वप्रथम हम अपने घ्यान के केन्द्रीत करने के लिए मूर्ति का सहारा लेते हैं। इस क्षण अनन्त ईश्वर जानने के लिए साधन मात्र होता है परन्तु बाद में वह साध्य बन जाता है। वे हिन्दु धर्म, ब्रह्मवाद एवं इनके समन्वय से ऊपर उठकर मानव-धर्म को स्पष्ट करते हुए कहते हैंः-

Scanned with CamScanner

"Brahman or the ultimate reality can be perceived only through human personality, we can know him and please him only through this medium, In this world our action amidst human surroundings are the best prayers to the Almighty. We care for human personality and human personality is the Divine Personality."[2.]

उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि सभी प्राणियों में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अनन्त से अपना तादात्म्य स्थापित करता है। धर्म मनुष्य का वह स्वभाविक गुण है जिसके बिना वह अपना तादात्म्य अनन्त से नहीं कर सकता। इसी से वह सम्पूर्ण मानवता का अनन्त साक्षात्कार करता है।

टैगोर के अनुसार धर्म जीवन से सन्यास या पलायन का नाम नहीं है बल्कि "धर्म असीम की ओर एक तीव्र पिपासा है, असीम एक आनन्दमय साक्षात्कार है।"[3.] यह धर्म ही है जो मनुष्य के पशुत्व को समाप्त कर देवत्व को प्राप्त कराता है। मानव के सारे उत्कृष्ट मूल्य जो ज्ञान, क्रिया, चरित्र एवं सृजनात्मक कृतियों में व्यक्त होते हैं, वे धर्म के ही परिचायक हैं। टैगोर इसे स्पष्ट करते हुए कहते हैं।

"In my language the word religion has a profound meaning. The wateriness of water is essentially its religion, in the spark of the flame lies the religion of fire. Like wise, man's religion is his innermost truth."[4.]

यानि जिस प्रकार वस्तु के आन्तरिक स्वरूप की अभिव्यक्ति उस वस्तु का धर्म है जलत्व जल का धर्म है तथा जलाना अग्नि का धर्म है। उसी प्रकार मनुष्य के आन्तरिक स्वरूप की अभिव्यक्ति मानव धर्म है।

Scanned with CamScanner

तो प्रश्न उठता है कि मनुष्य का यह आन्तरिक स्वरूप क्या है? टैगोर कहते हैं कि ''यह है मनुष्य की एक विशिष्ट निधि- जिसमें उसका मनुष्यत्व नहीं है, जो भौतिक चेतना से, भौतिक सीमाओं से सतत् ऊपर उठते रहने की प्रवृति है। यह उसकी शाश्वत, आन्तरिक सृजनात्मक शक्ति है। इसी की अभिव्यक्ति उसका धर्म है।''[15.]

अतः स्पष्ट है कि अपने से परे उठने की प्रवृति में धर्म की अभिव्यक्ति होती है। मनुष्य को आत्म-चेतना है तथा इस चेतना में उसे यह भी चेतना रहती है कि वह अपने 'स्व' से ऊपर उठ सकता है, कि वह उच्चतर आदर्शों की ओर अग्रसर हो सकता है।

यह मानव की विशेष विशिष्टता है, अतः इसी शक्ति का प्रस्फुटीकरण मानव का धर्म बन जाता है। इसके सतत् प्रस्फुटीकरण में यह उच्चतर रूपों को पाता जायेगा तथा अन्ततः यह ऐसी व्यापक श्रेष्ठतम चेतना के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा जहाँ वह सभी भेदों, सभी प्रकार, के द्वैत से ऊपर उठ व्यापक प्रेम' की अनुभूति में सबों की अनिवार्य एकता को अनुभूत कर सके। यह धर्म चरम आदर्श होगा। अतः टैगोर कहते हैं कि ''साम्यता से मनुष्य के धर्म का परिचय मिलता है, न कि उसकी चालाकी शक्ति एवं धन का।''[16.]

इस प्रकार टैगोर के अनुसार धर्म का लक्ष्य वैयक्तिक आत्म तथा परम-आत्म के ऐक्य की अनुभूति है। टैगोर का कहना है कि मनुष्य अपने धर्म को कई उपविभागों में विभक्त कर दिया है, जैसे मानव धर्म, राज धर्म, समाज धर्म, आचरण धर्म आदि। किन्तु ये धर्म कृत्रिम व्यवस्थाओं पर आधारित हैं, अतः ये यथार्थ धर्म नहीं है। यथार्थ धर्म सत्य पर आधारित होने के कारण नित्य एवं सामान्य होता है। मानव धर्म नित्य एवं शाश्वत है, क्योंकि यह सत्य पर आधारित है। अनित्य मानव ही नित्य ईश्वर है- यह तथ्य बोध ही मानव धर्म है। टैगोर ने कहा है - ''मेरा धर्म मानव है, जिसमें अनन्त मानवता परिभाषित होती है। यह मेरे प्रेम एवं साथ के लिए मेरे पास आता है।''[17.] वे इस

Scanned with CamScanner

ईश्वर में मानवत्व एवं मानव में ईश्वरत्व की बात करते हैं। उनका कहना है कि "इसमें कोई दोष नहीं है, क्योंकि अगर ईश्वर मानवीकरण से दूषित है तो मनुष्य को भी मनुष्य होने में दोष होना चाहिए।"[8.] अत: मानव का ईश्वरत्व तथा ईश्वर का मानवत्व टैगोर के मानव धर्म का मूल मंत्र है। वे मनुष्य को तुच्छ एवं महत्वहीन नहीं मानते। उनके अनुसार मनुष्य धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि है और इसलिए उसके द्वारा अपने अन्दर ईश्वर का ऐक्य अनुभव करना संभव है। ईश्वर तथा मनुष्य की पूर्ण एकता में जीवन का पूर्ण आनन्द सन्निहित है। टैगोर ने कहा है- "Whatever I can offer to God, I offer man and to God I give whatever I can give to man. I make God Man and Man God."[9.]

इस प्रकार हम पाते है कि टैगोर का मानव धर्म संस्थागत एवं साम्प्रदायिक धर्म से अलग है। टैगोर का मानव धर्म 'सच्चा धर्म' है, एक यथार्थ धर्म है। यह प्रत्येक मनुष्य का स्वभावगत् गुण है। अत: यह प्रत्येक मनुष्य में है भले ही मानव तर्क-वितर्क की स्थिति में थोड़ी देर के लिए इसे नकार दे लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मानव का विकास इसी यथार्थ धर्म के माध्यम से होता है।

संदर्भ सूचि

1. Gitanjali P. 100
2. Radha Krishnan, S., The Philosophy of R.N. Tagore, P-122
3. Tagore, R.N., The Religion of Man page- 63
4. An Article in Indu Datta Tr, Tagore Testament. P.37
5. An Artcle Indu Datta Tr. Tagore Testament, p-37
6. Tagor, R.N., The Religion of man. P-90
7. Tagore, R.N.,- Personality P-60
8. Sadhana – P-04
9. Tagore, R.N., The Religion of Man. Page-92

Scanned with CamScanner